International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

कमल कुमार के कथा–साहित्य में बिखरते पारिवारिक रिश्ते

हरिस्वरुप
शोधार्थी, हिंदी विभाग, सनराइज विश्वविद्यालय अलवर (राजस्थान)
Email - hrchulian700@gmail.com
Mobile – 9992382901

डॉ मीनेश जैन
प्रोफेसर, अध्यक्ष हिंदी विभाग, सनराइज विश्वविद्यालय अलवर (राजस्थान)

शोध आलेख :–

समाज की सबसे महत्वपूर्ण इकाई परिवार को ही माना जाता है, जिसमें संपूर्ण परिवार अपने माँ–बाप एवं बच्चों सहित रहता है। परिवार समाज का सबसे छोटा समूह होता है। समाज से ही प्रत्येक व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकताएँ पूरी होती हैं।

'परिवार' शब्द अंग्रेजी शब्द फैमिली (Family) या रोमन शब्द फेमुलस (Famulus) का हिन्दी अनुवाद है जिसका अर्थ नौकर से लिया गया है। रोमन कानून में ये शब्द दासों, स्वामियों तथा नौकरों के लिए प्रयोग में लाया जाता था। परिवार की कुछ परिभाषाएँ समाज वैज्ञानिकों ने इस प्रकार दी है–

मैकाइवर :– ''परिवार बच्चों की उत्पत्ति एवं पालन–पोषण की व्यवस्था करने हेतु पर्याप्त रूप से निश्चित और स्थायी यौन–संबंध से परिभाषित एक समूह है।''(1)

बर्गेस एवं लॉक :– ''परिवार उन व्यक्तियों का समूह है जो विवाह, रक्त या गोद लेने के बंधन से जुड़े हैं, एक गृहस्थी का निर्माण करते हैं। पति–पत्नी, माता–पिता, पुत्र और पुत्री, भाई और बहन, अपने–अपने क्रमशः सामाजिक कार्यों, अन्तःक्रिया एवं अंतःसंचार करते हैं तथा एक सामान्य संस्कृति का निर्माण करते हैं।''(2)

प्राचीन काल से ही परिवार एवं उनके सदस्यों में दया, करुणा, आपसी प्रेम एवं सहानुभूति होती थी। परिवार के लोग आपस में मिलजुल रहते एवं सहयोग भी करते थे परंतु आधुनिक युग में यह पारिवारिक एकता बिखरती जा रही है। प्रत्येक परिवार में तनावपूर्ण माहौल बना रहता है। संयुक्त परिवार टूटकर एकल परिवार में बदलने लगे हैं। मनुष्य समाज के साथ–साथ अपने परिवार से भी दूर होने लगा है। जिसके कारण रिश्तों में भी बिखराव लगा है।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

(1) माँ–बेटी के बिखरते रिश्ते :–

संसार की कोई भी स्त्री हो, उसके अंदर प्रेम, ममत्व और वात्सल्य की भावना निहित होती है। यही वात्सल्य भाव स्त्री को प्रकृति से प्रदत्त हुआ है। माँ और बेटी का संबंध बड़ा ही मित्रतापूर्ण एवं स्नेह से पूरित माना जाता है। एक स्त्री होने के कारण ही माँ–बेटी आपसी दुख–तकलीफ को भली–भाँति समझ पाती है। इसी कारण वे एक–दूसरे के करीब होती हैं। माँ एक बेटी के लिए उसकी गुरु के साथ–साथ उसकी सच्ची सहयोगी भी मानी जाती है क्योंकि माँ के कारण ही घर की बेटी सभी घरेलू कार्यों में पारंगत बन पाती है। प्रत्येक माँ अपनी बेटी को खूब पढ़ाना और जीवन में आगे बढ़ाना चाहती है। प्रत्येक माँ के लिए बेहद जरूरी एवं बड़ी जिम्मेदारी उसके लिए सुयोग्य वर तलाशने की होती है। हालांकि इसके लिए चिंतित पिता भी रहते हैं। सदियों से हमारा समाज पुरुषों को प्राथमिकता देता आया है और स्त्री को पुरुष से नीचा ही समझा गया है। माँ–बेटी के इसी बिखरते रिश्ते को कमल कुमार जी ने अपने साहित्य में उतारा है।

सुभागी का पति शुरू से ही उसे शराब पीकर खूब मारता है। वह बेहद दुखी है। इस बात से दुखी होकर वह अपनी माँ के पास चली जाती है। तभी उसकी माँ कहती है कि ''तुम अकेली क्यूं आई हो, नरपत को भी साथ ले आती।

''नरपत सिंह नहीं आया साथ में, माँ ने जलती आग में जैसे घी डाल दिया था। यह मेरी माँ है या नरपत की वकील ? मेरा फूटा सिर और सूजी आँखें देखकर भी उस कसाई को पूछ रही हो। वह तमतमा उठी थी, चल भैया ऑटो वाले, मोड़ो ऑटो वापस लो। अब मुझे जीना ही नहीं है, कहीं किसी कुएँ तालाब में जाकर कूद मरूँगी।''(3)

इसी प्रकार का माँ–बेटी के रिश्तों का बिखराव 'जंगल' कहानी में भी देखने को मिलता है। सुमन एक शिक्षित एवं खुले विचारों की महिला थी। वह बिना शादी किए एक बच्ची को जन्म देती है। जब वह बच्ची बड़ी होती है तो उसे पता चलता है कि वह अपनी माँ की नाजायज औलाद है। तब वह अपनी माँ को कोसते हुए कहती है ''मम्मा! शिल्पी सुमन का रास्ता रोककर खड़ी हो गयी थी। आपको मेरी जिंदगी नष्ट करने का अधिकार किसने दिया? अपनी जिंदगी पर आपका अधिकार हो सकता है, जिंदगी को प्रयोगशाला बना कर जो चाहे प्रयोग कर सकती हैं, लेकिन मेरी जिंदगी पर आपका अधिकार? आपने मुझे गिनीपिग समझा था? क्यों किया आपने ऐसा मेरे साथ।''(4)

(2) पिता–पुत्र के बिखरते रिश्ते :–

प्रत्येक परिवार में माँ–बाप के संबंध के पश्चात् पिता–पुत्र का रिश्ता अहम् होता है। प्रत्येक पिता की ये ख्वाहिश होती है कि उसका बेटा जीवन में एक बेहतर इंसान बन सके। एक

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

परिवार में जितनी जरूरी माँ होती है, उतने ही जरूरी पिता भी होते हैं। प्रत्येक पिता की यह नैतिक जिम्मेदारी है कि वह घर के सभी बच्चों को पढ़ाए और बेहतर नागरिक बनाकर समाज को आगे ले जाएं। लेकिन आज के समय में स्थिति विपरीत हो गई है। रिश्तों में आपसी प्रेम एवं अहमियत खत्म होती जा रही है। सभी माँ–बाप यही चाहते हैं कि उनके बच्चे उनके बुढ़ापे का सहारा बनें, लेकिन बच्चे तो बुढ़ापे से पहले से उन्हें कष्ट देने लगते हैं। लेखिका ने अपने कथा साहित्य में पिता–पुत्र के संबंधों का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है।

चन्द्रमोहन अपने बाबू जी की तीन वर्षों से देखभाल कर रहा था। वह सोचता रहता कि क्या बाबू जी की देखभाल करना क्या उसका ही फर्ज है? उनका दूसरा बेटा 3 सालों में आज तक अस्पताल तक न आया। इन 3 सालों में वह और उसका परिवार तिल–तिल मरा है। उसका एक बेटा बहुत आवारा हो गया, वहीं दूसरा बोर्ड परीक्षा की तैयारी नहीं करता है और बेटी ने भी पढ़ाई बंद कर दी। वह अपने बाबू जी के बारे में सोचता है कि वो अब 70 साल के हो गए हैं, अब और जीकर क्या करेंगे, अगर जी गए तो क्या होगा? उसकी संवेदनाएं अपने पिता के प्रति समाप्त होती जा रही थी। ''उसने सोचा था, क्या बाबू जी बचेंगे अब? उन्हें अब ऐसा करना भी क्या था। वह अब जी कर भी क्या कर सकते थे ? इन तीन सालों में बाबू जी कितना–कितना जिये थे या मरे थे, पता नहीं, वह जरूर मर रहा था।''(5)

(3) पिता–पुत्री के बिखरते रिश्ते :–

परिवार चाहे कोई भी और कैसा भी हो वहाँ आपसी प्रेम एवं सहानुभूति बेहद जरूरी होती है। सामान्यतः देखा गया है कि जहां एक माँ अपने बेटे से गहनता से जुड़ी होती है वहीं एक पिता का अपनी बेटी से आत्मीय संबंध होता है। इनका संबंध बेहद गूढ़ एवं मित्रवत भी माना जाता है। परंतु आधुनिक संदर्भ में इन रिश्तों के मायने बदलते जा रहे हैं। क्योंकि जो लड़की अपने पिता द्वारा चुने गए वर को बिना किसी असहमति के उसे स्वीकारती थी लेकिन आज वह ऐसा बिल्कुल नहीं करती, क्योंकि लड़कियाँ अब स्वयं की स्वतन्त्रता और अधिकारों के प्रति जागरुकता आने से अपने पसंदीदा लड़कों से शादी करने लगी हैं।

वह इस जरूरी विषय के बारे में घर में बताना तक उचित नहीं मानती। आधुनिक युग की बहुत सी लड़कियाँ अपने इन्हीं स्वार्थों की खातिर घर से भागकर भी शादी करने लगी हैं। ऐसा करने में उन्हें ना अपने माँ–बाप की इज्जत खोने का डर, ना समाज का कोई ख्याल रहता है। बहुत से पिता तो लड़की के पैदा होने पर इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखते हुए खुश नहीं होते। उनका परेशान मन सोचने लगता है कि कहीं बेहतर परवरिश एवं अच्छे संस्कार के बाद भी वह घर की इज्जत को समाज एवं दुनिया के सामने तार–तार न कर दे। 'अंतर्यात्रा' कहानी संग्रह में लेखिका ने इसी बिखराव को दिखाया है। जब सुमन शिक्षित एवं अविवाहित होने के

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

बाद भी एक बच्चे की माँ बन जाती है तो इस बात का पता लगते ही उसके पिता को दिल का दौरा आता है। वो इस बात से सुमन से बेहद खफा हो जाते हैं और उसे अपनी संपत्ति से बेदखल कर देते हैं।

''सुमन के डैड को पता चला था तो उन्हें दिल का दौरा पड़ा था। चार दिन आई.सी.यू. में रहे। कमरे में शिफ्ट किया तो सुमन और वे आमने–सामने थे। जरूर प्रिंसिपल और उसके साथ की गयी बात ही दूसरे शब्दों में दोहराई गयी होगी। कर्नल चोपड़ा ने अंत में कहा था सारी सम्पत्ति, घर और रुपया, पैसा ट्रस्ट को दान कर दूंगा। मैं तुम्हें अपनी बेटी मानने से इंकार करता हूँ।''(6)

(4) पिता की कठोरता से बिखरते पिता–पुत्र के रिश्ते :–

पिता–पुत्र के संबंधों में स्नेह और अनुशासन का संतुलन अत्यंत आवश्यक माना जाता है। प्रत्येक पिता अपने पुत्र को शिक्षित और सफल देखना चाहता है, किंतु जब बच्चों की क्षमताओं को समझने के स्थान पर उनसे अत्यधिक अपेक्षाएँ रखी जाती हैं, तब उनके मन में आत्मविश्वास के स्थान पर भय उत्पन्न होने लगता है। बच्चों को अपने माता–पिता के मार्गदर्शन के साथ–साथ स्नेह और प्रोत्साहन की भी आवश्यकता होती है। यदि परिवार में शिक्षा को लेकर निरंतर तुलना, अपमान और दंड का वातावरण बना रहे, तो इससे पिता–पुत्र के भावनात्मक संबंध प्रभावित हो सकते हैं। कमल कुमार ने अपनी 'नालायक' कहानी में इसी प्रकार के संबंधगत तनाव को प्रस्तुत किया है।

'नालायक' कहानी में चौधरी अपने पुत्र गोपी की पढ़ाई और परीक्षा परिणाम से असंतुष्ट रहता है। गोपी का गणित विषय में कमजोर होना उसके पिता को स्वीकार नहीं है। पिता उसे डाँटता है और कई बार मारपीट भी करता है। उसकी माँ शांति बीच में आकर पुत्र को बचाने का प्रयास करती है। जब चौधरी गोपी को पढ़ाई में कमजोर होने के कारण प्रताड़ित करता है, तब शांति उसे समझाते हुए कहती है – ''यूं मारने–पीटने से क्या होगा ? एक विषय है जो बच्चे को नहीं आता।''(7)

इस कथन के माध्यम से लेखिका ने एक ओर पिता की कठोर मानसिकता तथा दूसरी ओर माँ की सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि को सामने रखा है। गोपी अपने पिता के सामने पढ़ने से घबराने लगता है। वह उत्तर खोजने के स्थान पर पिता के क्रोध से बचने की चिंता करता है।

ऐसी स्थिति में पढ़ाई से संबंधित कठिनाई उसके लिए एक पारिवारिक संकट बन जाती है। इस प्रकार 'नालायक' कहानी में पिता–पुत्र के रिश्तों में बढ़ती दूरी का संबंध बच्चे के प्रति कठोर व्यवहार, परिवार में तुलना की प्रवृत्ति तथा भावनात्मक संवाद के अभाव से दिखाई देता है।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

(5) एकल मातृत्व और पारिवारिक पहचान का संकट :–

पारंपरिक पारिवारिक व्यवस्था में बच्चे की सामाजिक पहचान को प्रायः माता–पिता दोनों से जोड़ा जाता रहा है। किंतु विवाह–विच्छेद, अलगाव अथवा अविवाहित मातृत्व जैसी परिस्थितियों में स्त्री को बच्चे के पालन–पोषण के साथ उसकी सामाजिक और प्रशासनिक पहचान से संबंधित कठिनाइयों का भी सामना करना पड़ सकता है। कमल कुमार ने 'मदर मेरी' कहानी में इस प्रकार की समस्या को प्रमुखता से सामने रखा है। इस कहानी के माध्यम से लेखिका यह प्रश्न उठाती हैं कि किसी स्त्री का वैवाहिक संबंध समाप्त होने के बाद भी बच्चे से संबंधित कार्यों में पूर्व पति की पहचान और सहमति को कितना महत्त्व दिया जाना चाहिए।

'मदर मेरी' कहानी में एक तलाकशुदा माँ अपने बच्चे के पासपोर्ट से संबंधित औपचारिकताएँ पूरी करने कार्यालय पहुँचती है। वहाँ कर्मचारी उससे बच्चे के पिता का नाम और हस्ताक्षर माँगता है। स्त्री इस बात का विरोध करती है क्योंकि उसका वैवाहिक संबंध कई वर्ष पहले समाप्त हो चुका है। अपनी स्थिति स्पष्ट करते हुए वह कहती है ''देखिए, मेरा तलाक हो चुका है, वह भी दस साल पहले। मुझे अब उससे कुछ लेना–देना नहीं।''(8) यह कथन विवाह–विच्छेद के बाद स्त्री की स्वतंत्र पहचान और मातृत्व संबंधी अधिकारों के संघर्ष को अभिव्यक्त करता है।

कहानी में बच्चे की पहचान को अनिवार्य रूप से पिता के नाम से जोड़ने की प्रक्रिया माँ के सामने सामाजिक तथा मानसिक तनाव उत्पन्न करती है। यहाँ पारिवारिक रिश्तों का बिखराव केवल पति–पत्नी के अलगाव तक सीमित नहीं रहता, बल्कि उससे उत्पन्न स्थितियाँ माँ और बच्चे के जीवन को भी प्रभावित करती हैं। इस प्रकार लेखिका परिवार की बदलती संरचना तथा मातृत्व के साथ जुड़े अधिकारों और संवेदनशीलता की आवश्यकता को रेखांकित करती हैं।

(6) दाम्पत्य संबंधों में बढ़ती भावनात्मक दूरी :–

पति–पत्नी के संबंधों की मजबूती का आधार केवल विवाह का सामाजिक बंधन नहीं, बल्कि परस्पर विश्वास, सम्मान और भावनात्मक निकटता भी होती है। जब पति–पत्नी के बीच समझ और सहयोग का अभाव उत्पन्न होता है, तब वैवाहिक जीवन में असंतोष बढ़ सकता है। कभी–कभी एक ही घर में रहने के बावजूद दोनों के मन में दूरी बनी रहती है और पारिवारिक जीवन केवल औपचारिक संबंध के रूप में रह जाता है। कमल कुमार ने 'मैकडॉनल्ड' कहानी में कामकाजी स्त्रियों के अनुभवों तथा उनके निजी संबंधों के माध्यम से दाम्पत्य जीवन की इसी जटिलता को व्यक्त किया है।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

'मैकडॉनल्ड' कहानी में काम करने वाली एक महिला अपने व्यक्तिगत जीवन, छोटे बच्चे तथा पति के साथ असंतोषपूर्ण संबंध की चर्चा करती है। वह किसी दूसरे व्यक्ति के साथ भावनात्मक निकटता स्थापित करते हुए भी अपनी पारिवारिक परिस्थितियों की जटिलता से मुक्त नहीं हो पाती। वह अपने जीवन की स्थिति के विषय में कहती है ''मेरी अपनी प्राब्लम्स हैं मेरा एक छोटा बच्चा है. पति नामधारी एक व्यक्ति है मेरे जीवन में''(9) इस कथन से स्पष्ट होता है कि उसके लिए वैवाहिक संबंध बाहरी रूप से विद्यमान होने के बावजूद आत्मीय संतोष का आधार नहीं रह गया है।

यह कहानी आधुनिक जीवन में व्यक्तिगत स्वतंत्रता, आर्थिक आवश्यकता और पारिवारिक उत्तरदायित्वों के बीच उत्पन्न तनाव को सामने लाती है। स्त्री एक ओर अपने बच्चे और परिवार से संबंधित जिम्मेदारियों का सामना करती है, वहीं दूसरी ओर अपने निजी जीवन में भावनात्मक संतोष की तलाश करती है। लेखिका दाम्पत्य संबंधों की इसी जटिल परिस्थिति के माध्यम से यह संकेत करती हैं कि पारिवारिक रिश्तों के संरक्षण के लिए केवल सामाजिक मर्यादाएँ नहीं, बल्कि सम्मानपूर्ण व्यवहार और आपसी समझ भी आवश्यक हैं।

(7) वृद्धावस्था में माँ–पुत्र के बिखरते रिश्ते :–

भारतीय पारिवारिक व्यवस्था में वृद्ध माता–पिता की देखभाल को संतान का महत्त्वपूर्ण दायित्व माना जाता है। वृद्धावस्था में शारीरिक कमजोरी के साथ परिवार के सदस्यों की उपस्थिति और भावनात्मक सहयोग की आवश्यकता भी बढ़ जाती है। किंतु आधुनिक जीवन की व्यस्तताओं और व्यक्तिगत प्राथमिकताओं के कारण कई बार वृद्ध माता–पिता स्वयं को उपेक्षित अनुभव करते हैं। उनकी आर्थिक आवश्यकताओं की व्यवस्था हो जाने के बाद भी आत्मीय बातचीत, साथ और देखभाल का अभाव बना रह सकता है। कमल कुमार ने अपनी 'प्लीज टेक केयर' कहानी में वृद्ध माँ के जीवन से जुड़ी ऐसी ही भावनात्मक स्थिति को सामने रखा है।

'प्लीज टेक केयर' कहानी में टॉम अपनी वृद्ध माँ को छोड़कर जाने की तैयारी करता है। उसकी माँ अस्वस्थ है, परंतु टॉम को अपनी यात्रा पर निकलना है। वह माँ के प्रति स्नेहसूचक शब्द बोलता है और आसपास के लोगों से उसकी देखभाल करने का आग्रह करता है। विदा होते समय उसके शब्द हैं ''ओ.के. मम्मा। इट्स टाइम टू गो नाउ। प्लीज टेक केयर। आई लव यू मम्मा।''(10) इन शब्दों में स्नेह की अभिव्यक्ति है, किंतु कहानी की परिस्थितियाँ वृद्धावस्था में साथ और प्रत्यक्ष देखभाल की आवश्यकता को भी सामने लाती हैं।

इस कहानी में माँ–पुत्र के संबंधों को केवल संवेदनहीनता के रूप में नहीं, बल्कि आधुनिक जीवन की व्यस्तता और वृद्धावस्था की निर्भरता के बीच उत्पन्न संघर्ष के रूप में भी समझा जा सकता है। वृद्ध माँ को आर्थिक सहायता और औपचारिक आश्वासन के अतिरिक्त अपने परिजनों

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

के निकट रहने की भावनात्मक आवश्यकता है। इस प्रकार लेखिका स्पष्ट करती हैं कि पारिवारिक संबंधों में शारीरिक उपस्थिति, देखभाल और संवेदनशील व्यवहार का विशेष महत्त्व होता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि कमल कुमार जी ने अपने कथा–साहित्य के माध्यम से पारिवारिक रिश्तों में आए बिखराव का यथार्थ चित्रण किया है। यह बिखराव आज भी हमारे समाज में देखने को मिलता है।

संदर्भ सूची :–

1. ईमाइल दुर्खिम, समाज दर्शन की रूपरेखा, पृ. 97
2. एफ. एच. गिडिंग्स, प्रिंसिपल्स ऑफ सोशियोलॉजी, पृ. 11
3. कमल कुमार, मदर मेरी और अन्य कहानियाँ, पृ. 142
4. कमल कुमार, अंतर्यात्रा, पृ. 19
5. कमल कुमार, अंतर्यात्रा, पृ. 138
6. वही पृ. 19
7. कमल कुमार, नालायक, पृ. 63–74
8. कमल कुमार, मदर मेरी, पृ. 103
9. कमल कुमार, मैकडॉनल्ड, अर्गला, अप्रैल 2009
10. कमल कुमार, प्लीज टेक केयर, गगनांचल, मार्च–अप्रैल 2014, पृ. 71